IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक एवं दार्शनिक विचार–एक अध्ययन

रामकृष्ण शर्मा
(रिसर्च स्कॉलर)
निर्वाण यूनिवर्सिटी जयपुर (राज.)

सारांश–

प्रस्तुत प्रपत्र में स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक एवं दार्शनिक विचारों तथा उनके सामाजिक योगदानों पर चर्चा की गई है। हम विश्व के सबसे बड़े सांस्कृतिक सम्पन्न राष्ट्र में निवास कर रहे है। पूर्वकालिक से लेकर आज तक हमारी संस्कृति और मूल्य परम्परा सम्पन्न बनी हुई है। परन्तु वर्तमान समय में मूल्य सम्पन्नता और संस्कारों के स्थानान्तरण में परिवर्तन आया है। इसलिए आने वाले समय में अनेक समस्याएँ आयेंगी जिसका मूल कारण शैक्षिक विचारों का सामाजिक शक्तिकरण है।'

मुख्य शब्दावली– स्वामी दयानन्द सरस्वती, शैक्षिक एवं दार्शनिक विचार

जीवन परिचय–

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जन्म 12 फरवरी टंकारा में सन 1824 में मोरबी के पास गुजरात के काठियावाड क्षेत्र जिला–राजकेट में हुआ था। उनके पिताजी का नाम करशन जी लाल तिवारी तथा माँ का नाम यशोदा बाई था। उनके पिताजी एक कलैक्टर (कर लेने वाले) तथा ब्राह्मण परिवार के समृद्ध और प्रभावशाली व्यक्ति थे। इनका मूलशंकर नाम इसलिए पड़ा की उसका जन्म मूल नक्षत्र में हुआ था। दयानन्द सरस्वती जी बचपन से ही बडे मेधावी व विद्वान थे। उन्होंने दो बर्ष की अवस्था में गायत्री मंत्र का शुद्ध उच्चारण करना सीख लिया था। वे बचपन से पारिवारिक कारण से शिव भक्ति के परम पुजारी थे। इनकी संस्कृत पढने में बचपन से ही रुचि थी। 14 वर्ष की आयु तक मूलशंकर ने सम्पूर्ण संस्कृत व्याकरण, सामवेद और यजुर्वेद का अध्ययन कर लिया था। मथुरा के स्वामी विरजानंद महाराज इनके गुरु थे। शिक्षा गृहण करके गुरु की आज्ञा मानकर अखण्ड खण्डिनी पताका फहराई।

उन्होंने 12 जून 1875 को सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक की रचना उदयपुर में की। इन्होने 10 अप्रैल 1875 को बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की। स्वामी सरस्वती जी की मृत्यु उनके ही सहायक रसोइये ने स्वामी सरस्वती जी के दूध में काँच पीस कर मिला दिये थे जिससे स्वामी जी की मृत्यु 30 अक्टूबर 1883 को हो गई।

शिक्षा के क्षेत्र में योगदान –

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने शिक्षा के क्षेत्र में अपने सिद्धान्तों को गति देते हुए अपने जीवनकाल में सर्वप्रथम उन्होने संस्कृत पाठशालाओं की स्थापना की। सबसे पहले इन्होंने काशी, कासगंज (जिला एटा), छलेसर (जिला–अलीगढ़), फर्रूखाबाद तथा मिर्जापुर जिलों में ऐसी पाठशालाओं की स्थापना की, जिसमे छात्रों को निशुल्क पुस्तकें, खाना, कपडे, निःशुल्क दिये जाते थे। इनकी देखरेख के लिए स्वामी जी ने अपने सहयोगियों को निगरानी रखने के लिए कहा।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का प्रमुख उद्देश्य था कि शिक्षा प्रणाली के साथ–साथ विद्यार्थी के व्यक्तित्व का निर्माण भी होना चाहिए। स्व किताबों का चुनाव करते हुए समय विशेष की पहचान करना क्योंकि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालकों के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना है। स्वामी जी की मान्यता थी कि विद्यार्थियों को संस्कृत व मातृभाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं का अध्ययन भी करवाना था। शास्त्र शिक्षण के साथ–साथ छात्रों को कला कौशल का भी ज्ञान देना चाहिए ताकि भावी जीवन में अपना जीवकोपार्जन कर सकें।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बालक और बालिकाओं की शिक्षा पर बराबर जोर दिया। उन्होंने कहा कि दोनों में अन्तर करना हमारी शिक्षा को शोभनीय नहीं होता है। स्वामी जी की मान्यता थी कि वैदिक कालीन शिक्षा का उद्देश्य केवल मानव को आजीविका के योग्य बनाना था। शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के योग्य बनाया जाय ताकि शरीर के अन्दर विद्यमान शक्तियों का विकास करना भी महत्वपूर्ण उद्देश्य था।

सभी वर्गों के लिए अनिवार्य शिक्षा –

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने सभी वर्ग के बालक–बालिकाओं के लिए शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्रत्येक माता–पिता का अपना दायित्व होता है। स्वामी जी की मान्यता थी कि जिन माता–पिता ने अपने बच्चों को शिक्षा प्रदान नहीं की वे माता–पिता अपने बच्चों के शत्रु के समान थे। स्वामी जी का मत था कि स्त्री अपने घर की शिक्षित होगी तभी वह अपने गृहस्थ को ठीक प्रकार से चला सकती है। क्योंकि स्त्री पुरुष रथ के दो पहियों की तरह होते है। जिस प्रकार एक रथ के पहिए की कोई कीमत नहीं होती, उसी प्रकार एक दूजे के बिना समाज में हमारी कोई कीमत नहीं होती है।

स्वामी सरस्वती जी चाहते थे कि स्त्री शिक्षा में गृहस्थी सम्बन्धी कुछ अध्ययन बिन्दुओं का ज्ञान प्रदान कराया जाय जिससे वह अपने गृहस्थी जीवन को अच्छे से चला सकें। स्वामी जी की मान्यता थी कि यदि हरिजन शिक्षा प्राप्त करके उच्च स्थान को ग्रहण कर ले तो वह ब्राह्मण के समान पूजनीय हो जाता है। विद्या के प्रचार– प्रसार हेतु दयानन्द सरस्वती जी ने अपने सहपाठी लाला हंसराज को प्रेरणा दी और उनकी प्रेरणा से हंसराज जी ने लाहौर में सन 1886 में दयानन्द एग्लो वैदिक कॉलेज की स्थापना की। स्वामी दयानन्द की प्रेरणा से स्वामी श्रद्धानन्द जी ने 1901 में हरिद्वार के पास कॉगड़ी में 'गुरुकुल' की स्थापना की।

सामाजिक क्षेत्र में सुधार व शैक्षिक सुधार –

(क) स्त्री शिक्षा पर बल – समाज की उन्नति का विचार करते हुए, स्वामी जी ने स्त्री शिक्षा की ओर भी ध्यान आकर्षित किया। क्योंकि उस समय स्त्री शिक्षा पर किसी का भी ध्यान नहीं था। नारी पूर्णतया घर की चार दीवारी में हमेशा के लिए कैद रखी जाती थी। उससे छुटकारा पाने के लिए उन्होने अपना पूरा योगदान दिया था।

(ख) छुआछूत का विरोध – स्वामी दयानन्द जी ने समाज की शिक्षा का स्तर देखा कि कुछ लोग ही शिक्षित है। इसी के अभाव में ऊँच–नीच का भेद भाव किया जा रहा है। उनकी मान्यता थी कि सभी वर्गों का समाज में समान ही अधिकार होना चाहिए।

(ग) विधवा विवाह को मान्यता – स्वामी दयानन्द जी समाज में व्याप्त विधवा विवाह का सामाना करते हुए लोगों को देखा कि पुनःविवाह करना समाज में पूर्णरूपेण निषिद्ध था। क्योंकि उस समय बालविवाह अधिक हुआ करते थे जिसके कारण कभी किसी दुर्घटना के बाद पति छोटी सी उम्र में ही खत्म/जीवन लीला समाप्त हो जाती है तो नारी को सम्पूर्ण जीवन को सफेद साडी में चार दीवारी के अन्दर काटनी पड़ जाती है। इसलिए बच्चियों को भी उच्च शिक्षा प्रदान करके उनके जीवन को सुधारा व संभाला जा सकता है।

(घ) कन्या वध का विरोध करना – अक्सर कर उस समय कुछ कुलीन लोग व राजा महाराजा बेटी को जन्म होना अपसकुन व अपनी इज्जत नीची मानते थे तथा कन्या का वध उन दुष्टो के द्वारा कर दिया जाता था। स्वामी दयानन्द जी के कारण ही राजस्थान के कोटा राजपूत सियासत की कन्या वध कुप्रथा को रोका गया था। उसे कानूनी रूप से अपराध घोषित किया।

(ड) अवकाश का सदुपयोग करना – स्वामी जी की मान्यता थी कि बच्चों के अवकाश का सही प्रयोग करना मात–पिता का परम उददेश्य होना चाहिए जिससे बच्चे अनर्गल रास्ते पर न जा सकें। क्योंकि बालक अकेले में भी अपना समय व्यतीत करता है तो वह एकांकी महसूस करके अनर्गल रास्ते भी अपना सकता है।

(च) ब्रह्मचर्य पर विशेष बल – स्वामी दयानन्द जी ब्रह्मचर्य के पालन पर बचपन से ही ध्यान देते की वकालात करते है। क्योंकि शिक्षा अध्ययन करते समय जो बालक ब्रहमचर्य का पालन कर लेता है। वह उस महान तेजस्वी पुरुष के समान ईश्वर के समान पूजता है। क्योंकि बालक ब्रह्मचर्य के पालन करने से ही जीवन मे अच्छी सफलता को प्राप्त करता है।

(छ) मूर्ती पूजा का विरोध – स्वामी दयानंद सरस्वती जी हमारे भारतवासियों के साथ–साथ सम्पूर्ण मानव जाति का मन, वचन, कर्म व धर्म से उत्थान चाहते थे। तभी कहा गया है कि 'मनसा वाचा कर्मणा धर्माथानाम् उत्थानम् उदिष्यति। मन्दिर में धन–दौलत का दान न करके समाज में कमजोर व गरीब लोगों की मदद करें। भारतीय समाज का उत्थान जब हो सकता है मूर्ती पूजा के बजाय जन सेवा पर अधिक बल दिया जाय।

निष्कर्ष – स्वामी दयानन्द सरस्वती ने समाज में व्याप्त अनेकों कुरूतियों व रुढ़ियों और अंधविश्वासों से समाज को उनमुक्त करने का प्रयास किया। सरस्वती जी का सामाजिक आधुनिक शिक्षा पर अत्यन्त प्रभाव स्पष्ट दिखाई देते है। वे मूर्ति पूजा के विरोधी थे जो आज समाज की अंधविश्वासी परम्परा का खण्डन किया था वे शाश्वत सत्य पर विश्वास रखते जिसका आज समाज पर काफी प्रभाव व बदलाव देखने को आया है। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी पुरुष व महिला व गरीब आदि की शिक्षा की वकालात करते है जो कि वर्तमान समय में स्पष्ट छलकती है। आज गरीबी – अमीरी का फर्क समाज में कम देखने को मिलता है। समाज में हुआछूत जैसी भयानक बीमारी का उपचार किया था। जो समाज को गहरे गर्त में ले गयी थी। स्वामी सरस्वती जी ने समाज में विधवा विवाह जैसी कुरुती था कुप्रथा को नष्ट करने की समाज को प्रदान की जिसका वर्तमान में अच्छा प्रभाव व परिणाम देखने को मिल रहा है। और सरकारी व गैरसरकारी कार्यरत व्यक्ति का अवकाश का सदुपयोग में लेने की प्रेरणा अपने शिक्षण में प्रदान की जिससे आज व्यक्ति अवकाश का पूर्व अनुमान कर कार्य को पूरा करता है और युवा वर्ग से विशेषकर उन्होंने शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करने की शिक्षा दी। जिससे आज युवा वर्ग उनसे प्रेरित होकर समाज में नये आयामों को छू रहा है। अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि हमें अभी भी इन महापुरूषों की प्रेरणाओं से समाज में चार चाँद लगाने है। जिससे हमारा स्वस्थ समाज व स्वस्थ राष्ट्र होगा। हमारा देश फिर से एक बार जरूर विश्वगुरु बनेगा। क्योंकि भारत पहले भी विश्व गुरु रहा है और भविष्य में विश्वगुरु रहेगा। स्वामी दयानन्द स्वरस्वती जी ने कहा भी था कि **'वेदों की ओर लौटो'**।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- प्रो. रमन बिहारी लाल, ***शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्र के सिद्धान्त***, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ
- बृजभूषण शर्मा, ***शैक्षिक समाज विज्ञान***, उत्तरप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, मेरठ
- एन आर सक्सैना, डा. शिखा चतुर्वेदी, ***उदीयमान भारतीय समाज मे शिक्षा***, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ
- एन आर सक्सैना, के.पी. पाण्डेय , ***शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्र***, आर. लाल बुक डिपा, मेरठ
- डॉ. बैद्यनाथ प्रसाद वर्मा, ***विश्व के महान शिक्षा शास्त्री*** बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी (पटना)
- डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, ***उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक***, आर. लाल बुक डिपो मेरठ